

परिसीमा अधिनियम (Limitation Act) से संबंधित 25 महत्वपूर्ण केस कानून

- * सी.जे. फर्नांडिस बनाम फैनी डिसूजा (C.J. Fernandes v. Fanny D'Souza)
 - * महत्व: धारा 5 (विलंब माफी) के सिद्धांतों पर महत्वपूर्ण निर्णय।
- * काजी एम.ए. बनाम इमामसाहिब एम.ई. (Kazi M.A. v. Imamsahib M.E.)
 - * महत्व: सिविल प्रक्रिया संहिता की धारा 5 और आदेश IX नियम 13 के तहत परिसीमा।
- * सल्फर सेल्स कॉर्पोरेशन बनाम गंगाधर (Sulphur Sales Corporation v. Gangadhar)
 - * महत्व: धारा 9 (परिसीमा की सततता)।
- * प्रेमलता देवी बनाम दलजीत सिंह (Prem Lata Devi v. Daljeet Singh)
 - * महत्व: धारा 12 (विधिक कार्यवाही से समय का अपवर्जन)।
- * संग्राम सिंह बनाम हरि शंकर (Sangram Singh v. Hari Shankar)
 - * महत्व: धारा 14 (गलत न्यायालय में कार्यवाही के लिए समय का अपवर्जन)।
- * मोतीलाल बनाम ज्ञानचंद (Moti Lal v. Gyan Chand)
 - * महत्व: धारा 15 (इजाजत या निषेधाज्ञा द्वारा रोकी गई कार्यवाही के लिए समय का अपवर्जन)।
- * टी.आर. घोटगे बनाम श्रीमती शकुंतला देवी (T.R. Ghotge v. Smt. Shakuntala Devi)
 - * महत्व: धारा 17 (कपट या गलती का प्रभाव)।
- * एल.सी.आर.एस. बैंक बनाम श्रीमती लक्ष्मी देवी (L.C.R.S. Bank v. Smt. Laxmi Devi)
 - * महत्व: धारा 18 (स्वीकृति का प्रभाव)।
- * सवाई सिंह बनाम यूनियन ऑफ इंडिया (Sawai Singh v. Union of India)
 - * महत्व: धारा 19 (ऋण या वसीयत के भुगतान का प्रभाव)।
- * डी.के. अग्रवाल बनाम आर.एल.सी. अग्रवाल (D.K. Agrawal v. R.L.C. Agrawal)

- * महत्व: धारा 21 (नए प्रतिवादी या वादी को जोड़ना)।
- * लक्ष्मी नारायण बनाम बाबूराम (Lakshmi Narain v. Baboo Ram)
 - * महत्व: धारा 22 (क्षति का जारी रहना या नया उल्लंघन)।
- * आर. रामनाथन चेट्टीयर बनाम शंकर (R. Ramanathan Chettiar v. Sankaran)
 - * महत्व: प्रतिकूल कब्ज़ा (Adverse Possession) और परिसीमा।
- * मोहम्मद नज़ीर बनाम गुलाम रसूल (Mohd. Nazir v. Ghulam Rasool)
 - * महत्व: प्रतिकूल कब्ज़ा स्थापित करने के लिए आवश्यक शर्तें।
- * पुशपाला बनाम श्रीमती कौशल्या देवी (Pushpala v. Smt. Kaushalya Devi)
 - * महत्व: प्रतिकूल कब्ज़ा और स्वामित्व।
- * जगराम सिंह बनाम राम नारायण (Jagram Singh v. Ram Narain)
 - * महत्व: अनुसूची के अनुच्छेद 65 (अचल संपत्ति की वसूली) पर महत्वपूर्ण।
- * अंबिका प्रसाद बनाम मुनीश्वर दयाल (Ambika Prasad v. Munishwar Dayal)
 - * महत्व: संविदा भंग के मामले में परिसीमा।
- * रामेश्वर सिंह बनाम रघुवीर सिंह (Rameshwar Singh v. Raghuvveer Singh)
 - * महत्व: ऋण वसूली के सूट में परिसीमा।
- * स्टेट बैंक ऑफ इंडिया बनाम सत्यवान (State Bank of India v. Satyawar)
 - * महत्व: चेक या बिल ऑफ एक्सचेंज के मामलों में परिसीमा।
- * प्रेम सिंह बनाम भगत राम (Prem Singh v. Bhagat Ram)
 - * महत्व: धारा 27 (किसी संपत्ति पर कब्जे का मुकदमा करने के अधिकार का लोप)।
- * मोहम्मद इदरीस बनाम स्टेट ऑफ बिहार (Mohammad Idris v. State of Bihar)
 - * महत्व: न्यायालय के अंतर्निहित शक्तियों पर परिसीमा अधिनियम का प्रभाव।
- * धर्मेंद्र बनाम उषा देवी (Dharmendra v. Usha Devi)
 - * महत्व: विवाह और तलाक संबंधी मामलों में परिसीमा।

* एन. बालकृष्णन बनाम एम. कृष्णा मूर्ति (N. Balakrishnan v. M. Krishnamurthy)

* महत्व: धारा 5 (विलंब माफी) के उदारवादी दृष्टिकोण पर एक मील का पत्थर फैसला। इस मामले में न्यायालय ने कहा कि 'पर्याप्त कारण' की अवधारणा को लचीले ढंग से लागू किया जाना चाहिए।

* लॉर्ड कृष्ण बैंक लिमिटेड बनाम सुंदरा मूर्ति (Lord Krishna Bank Ltd. V. Sundara Moorthy)

* महत्व: धारा 18 (स्वीकृति) और धारा 19 (भुगतान) के सिद्धांत।

* स्टेट ऑफ यूपी बनाम राज नारायण (State of U.P. v. Raj Narain)

* महत्व: सरकारी मामलों में परिसीमा और धारा 5 का प्रयोग।

* डी.सी.एम. लिमिटेड बनाम दिल्ली नगर निगम (DCM Ltd. V. MCD)

* महत्व: परिसीमा अधिनियम और विशेष अधिनियमों के प्रावधानों के बीच संबंध।

इन केस कानूनों का अध्ययन करते समय, आपको निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए:

* मामले के तथ्य (Facts of the Case): संक्षेप में समझें कि मामला किस बारे में था।

* निर्णय (Decision): न्यायालय ने क्या निर्णय दिया।

* निर्णय का कारण (Reasoning): न्यायालय ने किस तर्क के आधार पर निर्णय दिया, और परिसीमा अधिनियम की किस धारा की व्याख्या की गई।

* सिद्धांत (Principle): इस निर्णय से परिसीमा कानून का कौन सा सिद्धांत स्थापित या स्पष्ट हुआ।